International Journal of Home Science 2022; 8(2): 76-79

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2028; 8(2): 76-79
© 2022 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 14-03-2022
Accepted: 18-04-2022

डॉ0 अलका
एसोसिएट प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग, वैशाली महिला कॉलेज हाजीपुर, बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

कुमारी रश्मी मिश्रा
शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग, बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 अलका
एसोसिएट प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग, वैशाली महिला कॉलेज हाजीपुर, बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

कामकाजी महिलाओं की शिक्षा का उनकी वैधानिक स्थिति पर पड़नें वाले प्रभाव का एक अध्ययन (हाजीपुर शहर के संबंध में)

डॉ0 अलका एवं कुमारी रश्मी मिश्रा

सारांश
महिलाओं को परिवार और समाज में अपना सम्मान पाने के लिए आर्थिक रूप से निर्भर होने के साथ– साथ उन्हें अपनें अधिकारों के प्रति जागरूक होनें की सलाह दी जाती है। यद्यपि प्राचीन काल से अशिक्षित एवं मजदूर वर्ग की महिलाये अनेक प्रकार के काम काज करती रही हैं, जो अधिकांशतः शारीरिक श्रम से संबंधित होते है तथा धनोपार्जन काफी कम होता है। अतिशिक्षित परिवारों, एवं उच्च शिक्षित परिवारों की महिलाएं पहले से ही उच्च पदों पर आसीन होकर कामकाज करती रही हैं, और अधिक धन प्राप्त करती है अर्थात शिक्षा का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से महिलाओं के वैधानिक स्थिति पर प्रभाव पड़ता स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, इन्ही सब तथ्यों को देखते हुए वर्तमान अध्ययन बिहार राज्य के वैशाली जिला के हाजीपुर शहर से आसयाना कॉलोनी, विशुनपुर पलटू, चाणक्य कॉलोनी, शाही कॉलोनी एवं मीठा कुँआ क्षेत्र का चयन इस शोध कार्य के लिए किया गया है। इन क्षेत्रों से कुल 200 कामकाजी महिलाओं (20–40 वर्ष) का चयन रैण्डम सैम्पलिंग विधि से किया गया। अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्थिति का उनकी शिक्षा के साथ कोई संबंध नहीं है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि कामकाजी महिलाओं की शिक्षा का उनकी आय, पद/कार्य की प्रवृति, वैधानिक जागरूकता, सामाजिक कार्यो में सहभागिता एवं आर्थिक स्वतंत्रता के साथ घनिष्ट सह संबंध पाया गया, फिर भी हाजीपुर शहर में आज भी लगभग एक तिहाई कामकाजी महिलाएं अपनें अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं है और जो जागरूक महिलायें है उनमें से अधिकांश उच्च शिक्षा को प्राप्त की हुई है, अतः महिलाओं की शिक्षित करनें के प्रयासों के साथ–साथ उनको वैधानिक अधिकारों की जानकारी प्रदान करनें के लिए और अधिक प्रयास करनें की आवश्यकता है।

कूट शब्द : कामकाजी महिलाएं, शिक्षा, स्थिति

प्रस्तावना
हमें अपने घर परिवार समाज तथा देश की तरक्की एवं सुदृढ़ता चाहिए तो सबसे पहले हमें अपने घर की नारी को सम्मान देना चाहिए (डॉ. पारो चंजरए 1981)। 2102 में प्राप्त आंकड़ों के अनुसार कामकाजी महिलाओं की कुल भागीदारी मात्र 27 प्रतिशत है, अर्थात इतना सब कुछ होने के बाद भी, आज भी महिलाओं की स्थिति में बहुत कुछ सुधार की आवश्यकता है, अभी तो अधिकतर महिलाओं को यह आभास भी नहीं है की वे शोषण का शिकार हो रही हैं और स्वयं एक अन्य महिला का शोषण करने में पुरुष समाज को सहयोग कर रही है। महिलाओं को परिवार और समाज में अपना सम्मान पाने के लिए आर्थिक रूप से निर्भर होने की सलाह दी जाती है। यद्यपि प्राचीन काल से मजदूर वर्ग की महिलाये अनेक प्रकार के काम काज करती रही हैं, कुछ क्षेत्रों में जैसे घरों, सड़कों इत्यादि की साफ सफाई, कपडे धोना, नर्सिंग(दाई), सिलाई बुनाई, खेती बाड़ी सम्बन्धी कार्य इत्यादि में तो इनका एकाधिकार रहा है। अतिशिक्षित परिवारों, एवं उच्च शिक्षित परिवारों की महिलाएं पहले से ही उच्च पदों पर आसीन होकर कामकाज करती रही हैं। जहाँ तक उच्च शिक्षित परिवारों की महिलाओं की बात की जाय तो उन परिवारों में महिलाएं अपेक्षाकृत हमेशा से ही सम्मान प्राप्त रही हैं। परन्तु मजदूर वर्ग में शिक्षा के अभाव में रूढीवादी समाज के कारण आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होते हुए भी अपमानित होती रहती थीं और आज भी विशेष बदलाव नहीं हो पाया है। महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने, और शिक्षित होने के चलते मध्य वर्गीय परिवार की महिलाएं भी नौकरी, दुकानदारी अर्थात व्यापार, ब्यूटी पार्लर, डॉक्टर जैसे व्यवसायों में पुरुषो के समान कार्यों को अंजाम देने लगी हैं। डॉक्टर, वकील, आई.टी., सी.ए., पोलिस जैसे क्षेत्रों में आज महिलाओं की बहुत मांग है। परन्तु हमारे समाज का ढांचा कुछ इस प्रकार का है की महिला को कामकाजी होने के बाद भी नए प्रकार के संघर्ष से झूझना पड़ता है। उच्च शिक्षित वर्ग की महिलाओं द्वारा सभी पोषक तत्वों का सेवन निम्न शिक्षित वर्ग की महिलाओं की तुलना में काफी अधिक था (झा 1994)।

निरक्षर अथवा प्राथमिक स्तर तक शिक्षित महिलाएं मुख्य रूप से उपभोग से जुड़ी सेवाओं में कार्यरत थीं न कि उत्पादन से जुड़े औद्योगिक व्यवसाय में। महिला कार्यकर्ता अकुशल, निम्न स्थिति, कम प्रतिष्ठा वाली मृत अंत नौकरियों जैसे दाइयों, स्वास्थ्य आगंतुकों, क्लर्कों, शिक्षकों, नर्सों, अकुशल कार्यालय कर्मचारियों आदि में केंद्रित थीं (सक्सेना 1993)। शहरी गृहणियों के बीच उच्च शैक्षिक और कैरियर की आकांक्षाओं के साथ रीति–रिवाजों और परंपरा से बंधे पारिवारिक जीवन शैली से आधुनिकता में उभरने के संक्रमणकालीन चरण पर होना भी कामकाजी पत्नियों के बीच इस तरह की जीवन संतुष्टि का कारण हो सकता है। यह महिलाओं की बेहतर मानसिक संतुष्टि में योगदान देता है और बदले में संभवतः अधिक से अधिक कार्य प्रदर्शन में योगदान देता है (ठाकुर 1987)। महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। परंतु उसके योगदानों को महत्व नहीं दिया जाता है। महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण का क्षेत्र शिक्षा, स्वास्थय, पोषण एवं वातावरण इत्यादि में निहित है। महिलाओं की सहायक सेवाएं जैसे बच्चों की देखभाल, गृहकार्य इत्यादि में पुरूषों के योगदान की आवश्यकता है। हालांकि महिलाओं के लिए चलाए जा रहे विकास कार्यक्रम अच्छा परिणाम दे रहे हैं परंतु आज भी सशक्तिकरण जैसे मुद्दे को मीलों दूर जाना है। कई अध्ययनों से यह पता चला है कि कामकाजी महिलाएं जो अशिक्षित अथवा कम शिक्षित थी अपनें अधिकारों के बारे विशेष जानकारी नहीं है, अथवा वे अपनें अधिकारों के लिए आवाज नहीं उठा पा रही थी, जिसकी वजह से समाज एवं स्वयं के परिवार में स्थिति काफी खराब पाई गयी, वो किसी न किसी रूप में शोषित होती रहती हैं। अतः उक्त बातों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अध्ययन ''कामकाजी महिलाओं की शिक्षा का उनकी वैधानिक स्थिति पर पड़नें वाले प्रभाव'' का अध्ययन किया गया है।

शोध प्रकिया

बिहार राज्य के वैशाली जिला के हाजीपुर शहर से *आसयाना कॉलोनी, विशुनपुर पलटू, चाणक्य कॉलोनी, शाही कॉलोनी एवं मीठा कुँआ क्षेत्र* का चयन इस शोध कार्य के लिए किया गया है। इन क्षेत्रों से कुल 200 कामकाजी महिलाओं (20–40 वर्ष) का चयन रैण्डम सैम्पलिंग विधि से किया गया। आंकड़ों का संग्रह करने के जिए शोध विषय से सम्बन्धित प्रश्नों की एक अनुसूची तैयार की गयी, तथा जिसका उत्तर साक्षात्कार, एवं अवलोकन/निरीक्षण विधि के माध्यम से कामकाजी महिलाओं से संकलित किया गया। प्रतिशतता, Z-score एवं P-Value का प्रयोग करते हुये सारणीयों के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

परिणाम एवं विचार विमर्श:

सारणी सं0 1: शिक्षा के आधार पर कामकाजी महिलाओं का वर्गीकरण

क्र0 सं0	शिक्षा	कामकाजी महिलाएं	
		f	%
1	निरक्षर	24	12.00
2	इण्टरमीडिएट तक	119	59.50
3	इण्टरमीडिएट से अधिक	57	28.50
कुल		200	100.00

सारणी सं0–1 कामकाजी महिलाओं की शिक्षा से संबंधित आंकड़ों को प्रदर्शित कर रहा है। ऑकड़ों के अनुसार कुल कामकाजी महिलाओं में 12 प्रतिशत निरक्षर, 59.5 प्रतिशत की शिक्षा इण्टरमीडिएट स्तर तक तथा 28.5 प्रतिशत की शिक्षा इण्टरमीडिएट से अधिक थी। ऑकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हो रहा है कि आधुनिक समय में भी महिलाओं में उच्च शिक्षा का अभाव है।

सारणी सं0–2: शिक्षा का आर्थिक स्वतंत्रता पर प्रभाव

क्र0 सं0	आर्थिक स्वतंत्रता	कामकाजी महिलाएं						Chi-square	P-Value
		निरक्षर		इण्टरमीडिएट तक		इण्टरमीडिएट से अधिक			
		f	:	f	:	f	:		
1	हॉ	03	12.5	44	36.97	37	64.91	22.0913	.000016*
2	नहीं	21	87.5	75	63.03	20	35.09		
कुल		24	100	119	100	57	100		

Significance Level = 0.05
* Significant at p < .05

The chi-square statistic 22.0913, *p*-value .000016 The result is significant at *p* < .05. यह प्रदर्शित कर रहा है हाजीपुर शहर की कामकाजी महिलाओं की शिक्षा स्तर का उनकी आर्थिक स्वतंत्रता के साथ घनिष्ट संबंध है (सारणी सं0–2)। हाजीपुर शहर की कम शिक्षित कामकाजी महिलाओं में आर्थिक स्वतंत्रता का सर्वथा अभाव दिखा। उच्च शिक्षित अधिकांश कामकाजी महिलायें आर्थिक रूप से स्वतंत्र थी। उन पर आर्थिक पावंदी का कम प्रभाव पाया गया, फिर भी अधिकांश कामकाजी महिलाएं चाहे वह साक्षर हो अथवा निरक्षर उनकी आर्थिक स्वतंत्रा पर पति अथवा परिवार के अन्य सदस्यों के द्वारा रोक लगाया गया था, वे धनोपार्जन तो करती थी लेकिन अपनें मर्जी के अनुसार खर्च नहीं कर सकती थी, निरक्षर या कम शिक्षित महिलाओं में यह स्थिति अधिक पाई गयी।

सारणी सं0–3: शिक्षा का उनकी सामाजिक स्थिति पर प्रभाव

क्र0 सं0	सामाजिक स्थिति	कामकाजी महिलाएं						Chi-square	P-Value
		निरक्षर		इण्टरमीडिएट तक		इण्टरमीडिएट से अधिक			
		f	%	f	%	f	:		
1	प्रभावशाली	03	12.50	24	20.17	21	36.82	9.1356	.057798
2	सामान्य	13	54.17	58	48.74	26	45.61		
3	खराब	08	33.33	37	31.09	10	17.54		
कुल		24	100	119	100	57	100		

Significance Level = 0.05
* significant at *p* < .05

The chi-square statistic 9.1356, *p*-value .057798 The result is not significant at $p < .05$. यह प्रदर्शित कर रहा है हाजीपुर शहर की कामकाजी महिलाओं की शिक्षा स्तर का उनकी सामाजिक स्थिति के साथ कोई सहसंबंध नहीं है (सारणी सं0–3)। निरक्षर, कम शिक्षित अथवा उच्च शिक्षित कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्थिति लगभग एक बराबर थी। पर्दा प्रथा, पुरूष प्रधान समाज, रूढिवादिता इत्यादि ऐसे अनेकों कारण भारतीय समाज में विद्यमान है जिसका असर हर वर्ग की कामकाजी महिलाओं पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

सारणी सं0–4: शिक्षा का कामकाज के प्रकार पर प्रभाव

क0 सं0	कामकाज का प्रकार	कामकाजी महिलाएं						Chi-square	P-Value
		निरक्षर		इण्टरमीडिएट तक		इण्टरमीडिएट से अधिक			
		f	%	f	%	f	:		
1	उच्च पद	1	04.17	2	01.68	08	14.03	31.682	.000019*
2	निम्न पद	1	04.17	35	29.41	24	42.11		
3	व्यवसाय	06	25.00	26	21.85	13	22.81		
4	मजदूर वर्ग	16	66.66	56	47.06	12	21.05		
कुल		24	100	119	100	57	100		

Significance Level = 0.05
* significant at $p < .05$

The chi-square statistic 31.682, *p*-value .000019 The result is significant at $p < .05$. यह प्रदर्शित कर रहा है हाजीपुर शहर की कामकाजी महिलाओं की शिक्षा स्तर का उनके कामकाज के प्रकार अथवा पद धारिता के साथ घनिष्ट सह संबंध है (सारणी सं0–4)। उच्च शिक्षा प्राप्त अधिकांश कामकाजी महिलाएं उच्च पद अथवा निम्न पद धारित की हुई थी। मजदूर वर्ग में इनकी संख्या काफी कम थी। आधे से अधिक निरक्षर कामकाजी महिलाएं मजदूर वर्ग से संबंधित कार्य कर रही थी, लगभग यही स्थिति (47.06 प्रतिशत) इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा प्राप्त कामकाजी महिलाओं में भी दिखाई दिया। व्यवसाय में सभी शिक्षित वर्ग की लगभग समान कामकाजी महिलाएं शामिल थी।

सारणी सं0–5: शिक्षा का मासिक आय पर प्रभाव

क0 सं0	मासिक आय	कामकाजी महिलाएं						Chi-square	P-Value
		निरक्षर		इण्टरमीडिएट तक		इण्टरमीडिएट से अधिक			
		f	%	f	%	f	:		
1	25000रू0 से कम	15	62.50	79	66.39	17	29.82	24.6067	.00006*
2	25001 रू0 –50000 रू0	07	29.17	35	29.41	29	50.88		
3	50000 रू0 से अधिक	02	08.33	05	04.20	11	19.30		
कुल		24	100	119	100	57	100		

Significance Level = 0.05
* significant at p < .05

The chi-square statistic 24.6067, *p*-value .00006 The result is significant at $p < .05$. यह प्रदर्शित कर रहा है हाजीपुर शहर की कामकाजी महिलाओं की शिक्षा स्तर का उनकी मासिक आय के साथ घनिष्ट सह संबंध है (सारणी सं0–5)। उच्च शिक्षा प्राप्त अधिकांश कामकाजी महिलाएं (70.18 प्रतिशत) 25000 रू0 से अधिक धनोपार्जन एक माह में कर रही थी। 62.5 प्रतिशत निरक्षर कामकाजी महिलाएं तथा 66.39 प्रतिशत इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा प्राप्त कामकाजी महिलाओं का मासिक आय 25000 रू0 से कम पाया गया।

सारणी सं0–6: शिक्षा का सामाजिक कार्यो में भागीदारी पर पड़नें वाला प्रभाव

क0 सं0	भागीदारी	कामकाजी महिलाएं						Chi-square	P-Value
		निरक्षर		इण्टरमीडिएट तक		इण्टरमीडिएट से अधिक			
		f	%	f	%	f	%		
1	नियमित रूप से	02	08.33	31	26.05	19	33.33	24.4404	.000065*
2	अनियमित रूप से	08	33.33	68	57.14	30	52.63		
3	भागीदारी नहीं	14	58.33	20	16.81	08	14.04		
कुल		24	100	119	100	57	100		

Significance Level = 0.05
* significant at $p < .05$

The chi-square statistic 24.4404, *p*-value .000065 The result is significant at $p < .05$. यह प्रदर्शित कर रहा है हाजीपुर शहर की कामकाजी महिलाओं की शिक्षा स्तर का उनकी सामाजिक कार्यो में भागीदारी के साथ घनिष्ट सह संबंध है

(सारणी सं0–6)। उच्च शिक्षा प्राप्त लगभग एक तिहाई कामकाजी महिलाएं (33.33 प्रतिशत) नियमित रूप से सामाजिक कार्यो में भागीदारी कर रही थी। इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा प्राप्त लगभग एक चौथाई (26.05 प्रतिशत) कामकाजी महिलाओं के द्वारा भी नियमित रूप से सामाजिक कार्यों में भागीदारी किया जा रहा था। सामाजिक कार्यों में भागीदारी में निरक्षर कामकाजी महिलाओं की स्थिति काफी खराब है, इनमें से केवल 8.33 प्रतिशत ही सामाजिक कार्यो में हिस्सा ले रही थी, तथा इनका एक बड़ा समूह 58.33 प्रतिशत सामाजिक कार्यो में कोई रूचि नहीं ले रहा था।

सारणी सं0–7: शिक्षा का वैधानिक जागरूकता पर प्रभाव

क्र0 सं0	जागरूकता	कामकाजी महिलाएं						Chi-square	P-Value
		निरक्षर		इण्टरमीडिएट तक		इण्टरमीडिएट से अधिक			
		f	%	f	%	f	%		
1	हॉ	03	12.50	37	31.09	29	50.88	12.5173	.001914*
2	नहीं	21	87.50	82	68.91	28	49.12		
कुल		24	100	119	100	57	100		

Significance Level = 0.05
* significant at $p < .05$

जीम बीपुनंतम `जंजपेजपब 12ण5173ए चअंसनम ण001914 जीम तमेनसज पे `पहदपपिबंदज ंज च ढ ण05ण यह प्रदर्शित कर रहा है हाजीपुर शहर की कामकाजी महिलाओं की शिक्षा स्तर का उनकी सामाजिक कार्यों में भागीदारी के साथ घनिष्ट सह संबंध है (सारणी सं0–7)। उच्च शिक्षा प्राप्त लगभग आधी (50.88 प्रतिशत) कामकाजी महिलाएं अपनें अधिकारों के प्रति जागरूक थी तथा वे अपनें अधिकारों के लिए आवश्यकतानुसार आवाज भी उठाती थी। निरक्षर महिलाओं में अपनें अधिकारों के प्रति जागरूकता का सर्वथा अभाव पाया गया, 87.5 प्रतिशत अशिक्षित कामकाजी महिलाओं के द्वारा अपनें अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं थी। तालिका के ऑकड़ों का विश्लेषण करनें से यह स्पष्ट होता है कि लगभग एक तिहाई कामकाजी महिलाएं अपनें अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं है और जो जागरूक महिलायें है उनमें से अधिकांश उच्च शिक्षा को प्राप्त की हुई है।

निष्कर्ष:

अध्ययन के अनुसार उच्च शिक्षित अधिकांश कामकाजी महिलायें आर्थिक रूप से स्वतंत्र थी, उन पर आर्थिक पावंदी का कम प्रभाव पाया गया, फिर भी अधिकांश कामकाजी महिलाएं चाहे वह साक्षर हो अथवा निरक्षर उनकी आर्थिक स्वतंत्रा पर पति अथवा परिवार के अन्य सदस्यों के द्वारा रोक लगाया गया था, वे धनोपार्जन तो करती थी लेकिन अपनें मर्जी के अनुसार खर्च नहीं कर सकती थी, निरक्षर या कम शिक्षित महिलाओं में यह स्थिति अधिक पाई गयी। उच्च शिक्षा प्राप्त अधिकांश कामकाजी महिलाएं उच्च पद अथवा निम्न पद धारित की हुई थी। मजदूर वर्ग में इनकी संख्या काफी कम थी। उच्च शिक्षा प्राप्त कामकाजी महिलाओं की मासिक आय कम शिक्षित अथवा अशिक्षित महिलाओं की अपेक्षा काफी अधिक पाया गया। लगभग एक तिहाई कामकाजी महिलाएं जो उच्च शिक्षा को प्राप्त की थी नियमित रूप से सामाजिक कार्यों में भागीदारी कर रही थी। अध्ययन में यह पाया गया कि हाजीपुर शहर में आज भी लगभग एक तिहाई कामकाजी महिलाएं अपनें अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं है और जो जागरूक महिलायें है उनमें से अधिकांश उच्च शिक्षा को प्राप्त की हुई है।

सुझाव

- महिला सशक्तिकरण के सपनें को सच करनें के लिए लड़कियों के महत्व और उनकी शिक्षा को प्रचारित करनें के साथ–साथ आवश्यक सुविधा प्रदान करनें की आवश्यकता है।
- महिलाओं की वैधानिक जागरूकता के स्तर को संतोषजनक बनानें के लिए यह आवश्यक है कि महिलाएं वैधानिक अधिकार को समझे अतः सरकार को महिलाओं के वैधानिक अधिकारों की जानकारी प्रदान करनें हेतु आवश्यक प्रचार प्रसार करनें की आवश्यकता है।

सन्दर्भ सूची

1. भारत में कुपोषण एवं मृत्युदर, एस.एम. नायर, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, आई.एस.बी.एन– 81–237–1290–1, पुस्तक क्रम– 5664।
2. हसनैन, नदीम समकालीन भारतीय समाज, भारत बुक सेन्टर, लखनऊ। 2004.
3. जोशी, पुष्पा गांधी आन वोमन, सेन्टर फार वोमनश्स डेवलपमेन्ट स्टडीज, दिल्ली 1988.
4. एन. एम. मैथ्यु, स्टेटस आफ वूमेन हेल्थ। 1956.
5. सिंह वी एन 'आधुनिकाता एवं महिला सशक्तिकरण' रावत पब्लिकेशन्स जयपूर।2010.
6. रमोला वर्मा, दिल्ली की कामकाजी महिलाएँ, सूर्या प्रकाशन, दिल्ली। 2001.
7. शर्मा अनुपम तथा वार्षणेय संगीता इक्कीस्वी शताब्दी में महिला समस्याएं एवं सुभावनाए ' अल्फा पब्लिकेशन नई दिल्ली। 2013.
8. सी.डी. सिंह, नागौर में महिलाओं का अध्ययन, हिन्दी साहित्य अकादमी, जयपुर, राजस्थान 2000.
9. डॉ. प्रमिला कपूर, कामकाजी भारतीय नारी, राजपाल एंड संस, दिल्ली।